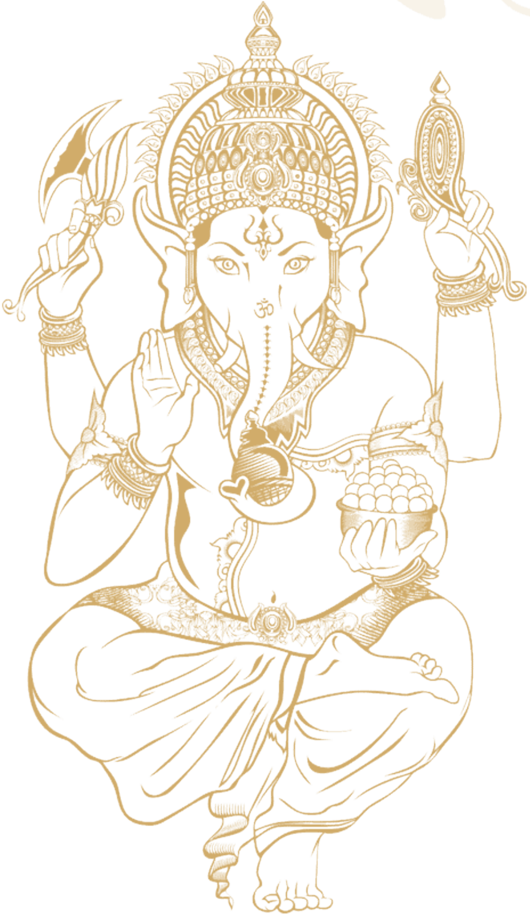

# Tripta Ahuja

31 May 1958

06:00 AM

Meerut

**Model: Baby-Horoscope** **Order No: 120981401**

**तिथि** 31/05/1958 **समय** 06:00:00 **वार** शनिवार **स्थान** Meerut **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:16:42
**अक्षांश** 29:00:00 उत्तर **रेखांश** 77:42:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:19:12 घंटे

| पंचांग | | अवकहड़ा चक्र | |
|---|---|---|---|
| साम्पातिक काल | 22:12:49 घं | गण | राक्षस |
| वेलान्तर | 00:02:31 घं | योनि | व्याघ्र |
| सूर्योदय | 05:21:26 घं | नाड़ी | अन्त्य |
| सूर्यास्त | 19:12:22 घं | वर्ण | शूद्र |
| चैत्रादि संवत | 2015 | वश्य | मानव |
| शक संवत | 1880 | वर्ग | सर्प |
| मास | ज्येष्ठ | युँजा | मध्य |
| पक्ष | शुक्ल | हंसक | वायु |
| तिथि | 13 | जन्म नामाक्षर | ती-तीप्ति |
| नक्षत्र | विशाखा | पाया(रा.-न.) | स्वर्ण-ताम्र |
| योग | परिघ | होरा | शनि |
| करण | तैतिल | चौघड़िया | काल |

| विंशोत्तरी | | योगिनी | |
|---|---|---|---|
| गुरु 15वर्ष 1मा 27दि | | धान्या 2वर्ष 10मा 3दि | |
| शुक्र | | संकटा | |
| 27/07/2016 | | 03/04/2019 | |
| 27/07/2036 | | 03/04/2027 | |
| शुक्र | 27/11/2019 | संकटा | 12/01/2021 |
| सूर्य | 26/11/2020 | मंगला | 03/04/2021 |
| चन्द्र | 28/07/2022 | पिंगला | 12/09/2021 |
| मंगल | 27/09/2023 | धान्या | 14/05/2022 |
| राहु | 27/09/2026 | भ्रामरी | 03/04/2023 |
| गुरु | 28/05/2029 | भद्रिका | 13/05/2024 |
| शनि | 27/07/2032 | उल्का | 12/09/2025 |
| बुध | 28/05/2035 | सिद्धा | 03/04/2027 |
| केतु | 27/07/2036 | | |

| ग्रह | व | अ | अंश | राशि | नक्षत्र | पद | स्वामी | अं. | स्थिति | षट्बल | चर | स्थिर | ग्रह तारा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | | | 24:31:07 | वृष | मृगशिरा | 1 | मंगल | राहु | --- | 0:00 | | | |
| सूर्य | | | 15:47:21 | वृष | रोहिणी | 2 | चंद्र | शनि | शत्रु राशि | 1.54 | मातृ | पितृ | वध |
| चंद्र | | | 20:42:03 | तुला | विशाखा | 1 | गुरु | गुरु | सम राशि | 1.17 | भ्रातृ | मातृ | जन्म |
| मंगल | | | 01:30:59 | मीन | पू०भाद्रपद | 4 | गुरु | राहु | मित्र राशि | 1.05 | ज्ञाति | भ्रातृ | जन्म |
| बुध | | | 26:11:11 | मेष | भरणी | 4 | शुक्र | केतु | सम राशि | 1.03 | अमात्य | ज्ञाति | प्रत्यारि |
| गुरु | व | | 29:01:11 | कन्या | चित्रा | 2 | मंगल | शनि | शत्रु राशि | 0.86 | आत्मा | धन | मित्र |
| शुक्र | | | 05:24:07 | मेष | अश्विनी | 2 | केतु | मंगल | सम राशि | 1.30 | पुत्र | कलत्र | क्षेम |
| शनि | व | | 00:09:16 | धनु | मूल | 1 | केतु | केतु | सम राशि | 1.72 | कलत्र | आयु | क्षेम |
| राहु | व | | 07:33:53 | तुला | स्वाति | 1 | राहु | राहु | मित्र राशि | | --- | ज्ञान | अतिमित्र |
| केतु | व | | 07:33:53 | मेष | अश्विनी | 3 | केतु | गुरु | मित्र राशि | | --- | मोक्ष | क्षेम |

## लग्न-चलित

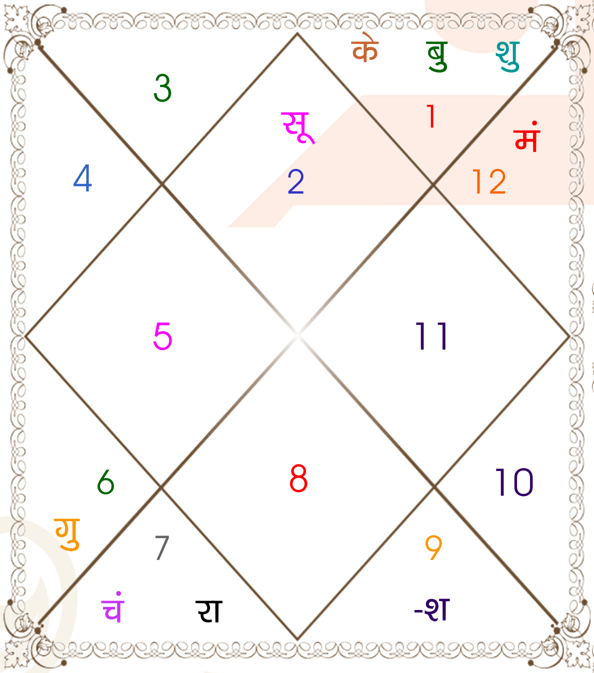


## चन्द्र कुंडली

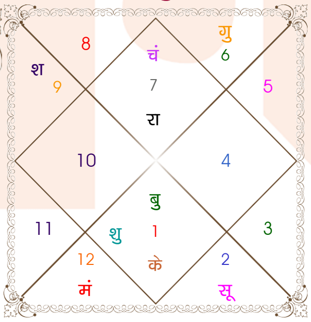


## नवमांश कुंडली

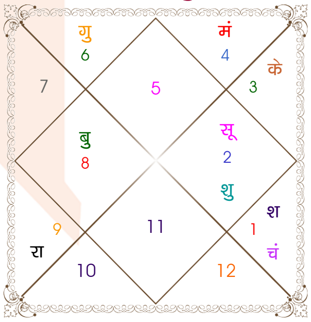


## सर्वाष्टकवर्ग

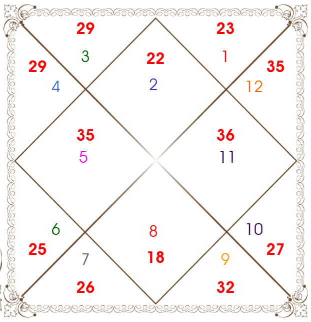


## दशमांश कुंडली

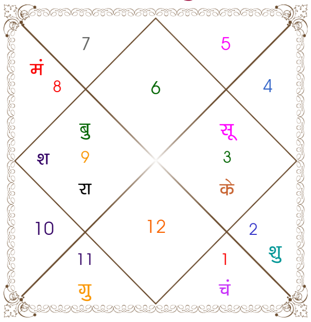

# नक्षत्रफल

आप विशाखा नक्षत्र के प्रथम चरण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि तुला तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपकी योनि व्याघ्र, वर्ग सर्प, वर्ण शूद्र, गण राक्षस तथा नाड़ी अन्त्य होगी। नक्षत्र के अनुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "ति" या "ती" से प्रारम्भ होगा।

आप अपने पति को वश में रखने में सफलता प्राप्त करेंगी। अपने समस्त सांसारिक कार्यों को आपके निर्देश तथा सलाह के अनुसार ही सम्पन्न करेंगे। बिना आपकी सलाह या आज्ञा लिए वे कोई भी कार्य नहीं कर सकेंगे। इस प्रकार आपका उनके ऊपर पूर्ण प्रभाव रहेगा। आपकी प्रवृति अभिमानी होगी तथा अनावश्यक रूप से कभी कभी समाज में इसका प्रदर्शन करती रहेंगी फलतः अन्य लोग आपसे विशेष प्रभावित नही रहेंगे। अपने दुश्मनों को पूर्ण रूप से पराजित करने में आप समर्थ होगी तथा कोई शत्रु आपका सामना नहीं कर पायेगा। आप में क्रोध की मात्रा भी अधिक रहेगी अतः छोटी छोटी बातों में क्रोध का प्रदर्शन करेंगी फलतः कई बार आपको इससे अतिरिक्त परेशानी उठानी पड़ेगी।

**गर्वी दारवशो जितारिरधिक क्रोधी विशाखोद्भवः।**
**जातक परिजातः**

अर्थात् विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक घमंड, हमेशा अपनी पत्नी के वश में रहने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला तथा अत्यधिक क्रोधी स्वभाव का होता है।

आपके मन में दूसरे लोगों के प्रति अकारण ईर्ष्या तथा द्वेष की भावना भी कभी कभी परिलक्षित होगी। यदि कोई व्यक्ति आपसे कोई अच्छा कार्य करेगा या सफलता प्राप्त करेगा तो आप यह सहन नहीं कर करेंगी तथा उससे ईर्ष्या करेंगी। आपकी इस प्रवृति से अन्य लोग आपको अच्छा नहीं समझेंगे। आपका शरीर कोमल कान्ति से सुशोभित रहेगा। आप अपनी वाक्पटुता के कारण समाज में ख्याति प्राप्त करेंगी तथा चतुराई से अन्य लोगों को प्रभावित करने में सफल रहेगी।

**ईर्ष्युर्लुब्धोः द्युतिमान्वचनपटुः कलहकृद्विशाखासु।।**
**बृहज्जातकम्**

अर्थात विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक ईर्ष्या तथा द्वेष करने वाला, लोभी, कान्तियुक्त, वाक्चतुर तथा कलहप्रिय होता है।

धामिकता की भावना से भी आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा देवताओं को प्रसन्न करने के लिए नित्य हवनादि धामिक कृत्यों को सम्पन्न करती रहेंगी। साथ ही आपके वास्तविक मित्र भी अल सख्या में रहेंगे।

**सदानुरक्तोग्निसुरक्रियायां धातुक्रियायामपि चोग्रसोम्यः।**

**यस्य प्रसूतौ च भवेद्विशाखा सखा न कस्यापि भवेन्मनुष्यः।।**
**जातकाभरणम्**

अर्थात् विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवादि पूजन के निमित हवनादि कार्यों में रत रहने वाला, धातुक्रिया में कभी उग्र तो कभी सौम्यता का प्रदर्शन करने वाला तथा किसी का भी मित्र नहीं होता है।

आप हृदय से कठोर होंगी तथा दया एवं करूणा के भाव की इसमे न्यूनता रहेगी। अन्य लोगों से आपका विवाद तथा कलह चलता रहेगा। इसके अतिरिक्त अन्य सामीजक जनों व्यक्तियों से भी आपके मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे।

**अतिलुब्धोऽतिमानी च निष्ठुरः कलहप्रियः।**
**विशाखायां नरो जातः वैश्याजन रतो भवेत।।**
**मानसागरी**

अर्थात विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अति लोभी, घमंडी, निष्ठुर, झगड़ा करने वाला तथा अन्य स्त्रियों से संबंध रखने वाला होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ है। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते है। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा। अपितु अधिकांश शुभ ही रहेगा। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु भी अल्प मात्रा में ही रहेंगे वे सभी आपसे पराजित तथा प्रभावित रहेंगे। कभी कभी आप स्वाभाविक रूप से क्रोध या उग्रता का भी प्रदर्शन करेंगी। आप सुन्दर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा शरीर में लावण्यता पूर्ण रूपेण विद्य मान रहेगी। जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। इसके अतिरिक्त कभी कभी आप अल्प मात्रा में शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगी।

तुला राशि में पैदा होने के कारण आप शरीर तथा मुख से सन्दर रहेंगी। आपकी आखें बड़ी होंगी तथा नासिका भी उन्नत रहेगी। नाना प्रकार के वाहनादि साधनो से आप हमेशा सुशोभित रहेगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। वाहन तथा भूमि से आप बलवती होंगी तथा इनसे पूर्ण लाभार्जन करने में समर्थ रहेंगी। आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा समाज में आपको पूर्ण सम्मान तथा आदर प्राप्त होगा। धन वैभव एवं ऐश्वर्य का आपके पास अभाव नहीं रहेगा इससे आप हमेशा सुशोभित रहेंगी। अपने पति को आप पूर्ण रूप से अपने वश में रखेंगी। विभिन्न प्रकार के कार्यों को करने में आप अत्यन्त ही चतुर रहेंगी। देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा भक्ति का भाव रहेगा तथा नियमानुसार आप

इनकी पूजा तथा सेवा करती रहेंगी। धन धान्य को संग्रह करने की प्रवृति भी आप में परिलक्षित होगी। इसके अतिरिक्त बन्धु वर्ग की भलाई के कार्यों को करने में भी आप हमेशा तत्पर रहेंगी।

**उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।**
**गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।**
**भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।**
**धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।**
**सारावली**

आप देवता ब्राहमण तथा भद्रजनों की सेवा में निरन्तर तत्पर रहेंगी। आप एक समाज में ख्याति प्राप्त विदुषी होंगी तथा शुद्धता से युक्त रहकर अपना जीवन व्यतीत करेंगी। आपका शरीर सुवासित रहेगा परन्तु शरीर के अधिकांश अंग कमजोर रहेगे। भ्रमण तथा यात्रा के प्रति आपकी गहन रूचि रहेगी। आपका अधिकांश समय यात्राओं तथा घूमने फिरने में ही व्यतीत होगा। खरीदने तथा बेचने की कला में आप हमेशा निपुण रहेंगी। अपने समीपस्थ संबंधियो तथा बन्धुओं की आप यत्न पूर्वक भलाई करेंगी परन्तु बाद में इन्ही लोगों के द्वारा उपक्षो भी सहन करनी पड़ेगी। साथ धन का आपके पास सामान्यतया अभाव नही होगा तथा इससे परिपूर्ण रहेंगी।

**देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।**
**प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।**
**हीनाङ्गः कयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरुक्।**
**बन्धूनामुपकारकृद्वि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।**
**बृहज्जातकम्**

आप प्रवृति से चंचल तथा शरीर से दुर्बल रहेंगी। आप अपने जीवन के समस्त कार्यकलापों को धैर्यपूर्वक सम्पन्न करेंगी तथा कार्यों में शीघ्रता या चंचलता आपको प्रिय नहीं होगी। न्याय के प्रति आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा आप स्वयं भी न्यायप्रिय होंगी। आपकी न्यायप्रियता तथा निष्पक्षता को देखकर अन्य लोग आपको अपने विवादों के समाधान करने के लिए मध्यस्थ या पंच मनोनीत करेंगे जिसे आप ईमानदारी से पूर्ण करेंगी। इसके साथ ही अपपकी संतति भी अल्प संख्यां में होगी तथा भाग्योदय भी काफी विलम्ब से होगा।

**चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।**
**प्रांशुश्च दक्षः कयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।**
**फलदीपिका**

आपका शारीरिक कद मध्यम रहेगा तथा सरकारी अधिकारियों तथा पदाधिकारियों को प्रसन्न करने की कला में आप चतुर होंगी। इनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होगा। कभी कभी आप अत्याधिक मात्रा में बोलना प्रारम्भ करेंगी तो बोलती ही रहेंगी इससे अन्य जनों को आपसे काफी असुविधा होगी फलतः आपका प्रभाव कम होगा। आप ज्योतिष शास्त्र अथवा ग्रहनक्षत्रादि के ज्ञान देने वाले शास्त्रों में भी प्रवीण रहेंगी साथ ही बन्धु तथा सेवक

वर्ग के प्रति आपके मन में हमेशा स्नेह की भावना रहेगी।

**भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी।**
**जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।**
**अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।**
**भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।**
**जातक दीपिका**

आप कभी कभी सुअवसर पर अपने क्रोध को प्रदशित करेंगे फलतः बाद में इसके लिए आपको दुःख की प्राप्ति होगी। आपकी वाणी मधुर तथा सर्वप्रिय होगी जिससे सुनकर अन्य लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। आपके मन में दया की भावना भी विद्यमान रहेगी अतः अवसर अनुकूल दीन दुःखियों के प्रति अपनी इस भावना को आप प्रदर्शित करती रहेंगी। आपके पास धनागमन में विषमता रहेगी कभी अत्याधिक मात्रा में तथा कभी अत्यल्प मात्रा में इसकी आपको प्राप्ति होगी। आप के नेत्रों में भी चंचलता रहेगी। आप घर में बलवान तथा घर से बाहर अपने को दुर्बल अनुभव करेंगी। आप मित्रो के मध्य अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी तथा घर से बाहर विदेश में भी प्रवास करेंगी।

**अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।**
**चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येऽति विक्रमः।।**
**वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।**
**प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।**
**मानसागरी**

आप नाना प्रकार के वाहन साधनों से सर्वथा सुशोभित रहेंगी तथा सहर्ष उनका उपभोग करेंगी। आपका स्वभाव दान शील होगा तथा यथा शक्ति आप इस प्रवृति का जीवन में पालन करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप समस्त वैभवो से भी युक्त रहेंगी।

**वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।**
**शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।**
**जातकाभरणम्**

राक्षस गण में उत्पन्न होने के काण आपकी प्रकृति कभी कभी अधिक तथा व्यर्थ बोलने की रहेगी। आप हृदय से भी कठोर होगी तथा दया एवं करूणा का भाव का अधमात्रा में प्रदशित करेंगी। आप छोटी छोटी बातों में शीघ्र ही उत्तेजित होने वाली होंगी। जिससे अन्य लोग आपसे विशेष प्रभावित नहीं रहेंगे। साहस का आपमें कभी भी अभाव नहीं रहेगा तथा अपने समस्त कार्यों को साहस पूर्वक सम्पन्न करेंगी। साहसिक कार्यों को करने के लिए भी हमेशा उद्य त रहेंगी। परन्तु आप अपने कार्य के लिए निम्न से निम्न कार्य को करने के लिए तत्पर हो जाएंगी। आपका स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा तथा शरीर में पूर्ण शक्ति रहेगी। अन्य लोगों से विवाद करने की प्रवृति भी आप में रहेगी फलतः अधिकांश लोगों से आपका विरोध भाव रहेगा। अतः अन्य जनों से विनम्रतापूर्वक व्यवहार करना चहिए।

आप जीवन में उन्माद तथा प्रमेह रोग से पीड़ित हो सकती हैं। आपका स्वरूप देखने में सामान्य तथा सुन्दर ही होगा। कभी कभी आपकी वाणी अत्यन्त ही कठोरता से पूर्ण रहेगी जिससे श्रोता अत्यन्त कष्टानुभूति करेगा। अतः आपने सम्भाषण में यत्नपूर्वक मधुर शाब्दो का प्रयोग करें।

**अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।**
**दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।**
**जातकभरणम्**

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

व्याघ्र योनि में पैदा होने के कारण आप अत्यन्त ही स्वतंत्रता प्रिय रहेंगी तथा स्वच्छन्दता आपके कार्यों को सम्पन्न करने की इच्छा रखेंगी। बाहरी हस्तक्षेप या कोई भी दबाव आपको पसन्द नहीं आएगा। समय समय पर धन धान्यादि को एकत्रित करने की प्रवृति से भी आप युक्त रहेंगी। अपने कार्य क्षेत्र में आप अत्यन्त सम्माननीय तथा आदरणीया मानी जाएगी क्यों कि आप पूर्ण प्रशिक्षित होंगी। आप एक गुण ग्राही महिला भी होंगी जो अच्छे गुणों या बातों को अन्य लोगों से ग्रहण करके उसे धारण करेंगी। लेकिन आप स्वयं अपने मुख से अपनी प्रशंसा स्वयं करेंगी अतः लोग आपसे प्रसन्न नही रहेंगे।

**स्वच्छन्दोडर्थरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।**
**आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।**
**मानसागरी**

अर्थात् व्याघ्र योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, अर्थसंग्रह में तत्पर, गुणों को ग्रहण करने वाला, दीक्षित, वैभव युक्त तथा अपने ही मुख से स्वयं अपनी प्रशंसा करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठभाव में स्थित है। अतः आप माता की प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से वे दुर्बलता की अनुभूति करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको पूर्ण रूप से हर सम्भव सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। इसके साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में यदि कोई व्यवधान आएंगे तो उन्हें दूर करने में सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगी तथा आपकी सफलता की सर्वदा इच्छुक होंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रखेंगी तथा हमेशा उनकी सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगी परन्तु आपके मध्य कभी कभी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे अप्रिय स्थितियां भी उत्पन्न होंगी लेकिन फिर भी सामान्य संबंध मधुर ही रहेंगे। साथ ही उनको जीवन में वांछित सहायता एवं सहयोग प्रदान करने की भी आप इच्छुक रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है। अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं उनकी आयु भी दीर्घ होगी। आपके प्रति उनके हृदय में वात्सल्य भाव रहेगा तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप जीवन में पिता के द्वारा यश अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त पिता के द्वारा आपके स्वास्थ्य का विशेष ध्यान भी रखा जाएगा।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगी तथा उनकी सेवा एवं आज्ञा पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथापि यदा कदा अल्प मात्रा में सैद्धान्तिक मतभेद विद्यमान रहेंगे जिससे यदा कदा विवाद की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। साथ ही आप जीवन में उन्हें अपना पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल एकादश में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप स्नेह एवं सम्मान प्राप्त करेंगी एवं जीवन के शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उनसे पूर्ण सहयोग तथा समयानुसार वांछित सहायता भी अजित करेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः अच्छा ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। आपके आय साधनों की वृद्धि में भी उनका प्रमुख योगदान रहेगा। धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सुख दुःख के समय आपकी यथा शक्ति सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे।

आपके अर्न्तमन में उनके प्रति स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में यथाशक्ति उनकी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपनी ओर से वांछित आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें कटुता का भाव उत्पन्न होगा। परन्तु यह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में भी अपना योगदान प्रदान करेंगी।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, शतमिषा नक्षत्र, मीन राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ रहेगा। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों, शतमिषा नक्षत्र, शुक्ल योग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवग्रहनिर्माण, कय विकयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा असफलता ही हाथ लगेगी। साथ ही गुरूवार, चतुर्थ प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वजित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के प्रति भी पूर्ण रूप से सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय ठीक नहीं चल रहा हो मानसिक परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्त करने में असफलता तथा अन्य शुभ कार्य सिद्ध नहीं हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी जी की उपासना करनी चाहिए एवं शुक्रवार के उपवास भी सम्पन्न करने चाहिए। साथ ही हीरा, सोना, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, श्वेत चन्दन, चावल, दूध इत्यादि पदार्थो को किसी सुयोग्य पात्र को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में भी न्यूनता रहेगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए।

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।